कृषि लोक
कृषि एवं किसान के लिए ई-पत्रिका
http://www.rdagriculture.in
e-ISSN No. 2583-0937
कृषि लोक,खंड 03 (01): 05-06, 2023

उच्च गुणवत्ता की गोबर की खाद बनाने की विधि

धर्म प्रकाश, सुनीता श्योराण एवं प्रमोद कुमार यादव

मृदा विज्ञान विभाग
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार।

Received: **Nov 13, 2022;** ***Revised:*** **Nov 17, 2022** ***Accepted:*** **Nov 20, 2022**

सदियों से किसान पुशओं के मलमूत्र, घर तथा खेती के अवशेषों को खेती में खाद के रूप में प्रयोग कर रहा है। परन्तु यह देशी खाद उच्च गुणवत्ता का न होने के कारण जमीन की उपजाऊ शक्ति को ज्यादा नहीं बढ़ाता है।

भारत में करीब 50 प्रतिशत गोबर उपले बनाकर ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार कुछ ही गोबर खाद के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। गोबर की खाद मुख्य रूप से पशुओं के मलमूत्र, घरों का कूड़ा करकट (राख, सब्जियों के अवशेष व मिट्टी), खराब चारा (भूसा व पुराना हरा चारा) आदि को मिलाकर बनाई जाती है। गोबर की खाद का कार्बन व नाइट्रोजन का अनुपात करीब 40ः1 होता है जो कि अगर सीधा ही जमीन में डाला जाए तो फसल को नुकसान कर सकता है। अगर गोबर की खाद को उचित तरीके से न बनाया जाए तो इसमें विद्यमान पोषक तत्व जैसे कि नाइट्रोजन का ह्रास हो जाता है और उसकी उपजाऊ शक्ति घट जाती है। इसलिए गोबर की खाद को अच्छी तरह गलाना-सड़ना जरूरी है ताकि उच्च गुणवत्ता की खाद बनाई जा सके तथा इसमें विद्यमान पोषक तत्व आसानी से पौधों को उपलब्ध हो सके। अच्छी गुणवत्ता की गोबर की खाद गड्ढ़ों में बनाई जाती है।

गड्ढ़ा तैयार करना

गड्ढ़ा नीची जगह पर नहीं होना चाहिए तथा यह ऐसी जगह पर होना चाहिए जहां बरसात का पानी बहकर इकट्ठा न होता हो। गड्ढा पशुओं के बाड़े के पास तथा घर से थोड़ी दूर होना चाहिए। अगर गड्ढे के ऊपर छप्पर बना दिया जाए तो और भी अच्छा रहेगा। गड्ढे का आकार किसान के पास पशुओं व दूसरें जैविक पदार्थो की उपलब्धता के अनुसार होना चाहिए जिसमें की वो अच्छी तरह गल सके। गड्ढे की चौड़ाई 2 मीटर व गहराई 1 मीटर से ज्यादा नहीं होनी चाहिए, परन्तु गड्ढे की लम्बाई पशुओं की संख्या व उपलब्ध जैविक पदार्थो की मात्रा पर निर्भर करती है। 4-5 पशुओं के लिए गड्ढे का आकार 5 मी × 2 मी ×1 मी काफी है।

e-ISSN No. 2583-0937

गड्ढे को भरना

गड्ढे के एक तरफ के 3 फुट हिस्से को पहले भरना चाहिए। गड्ढे में सबसे नीचे फसलों के अवशेषों की 7-8 सै.मी. मोटाई की एक परत लगा देनी चाहिए। पशुओं के पेशाब को इकट्ठा करने के लिए शाम के समय उनके नीचे फसलों के अवशेषों की बिछावन फैला देनी चाहिए। रोजाना सवेरे गोबर व बिछावन को इकट्ठा करके गड्ढे में डाल देना चाहिए तथा इसके बीच में घरों का कुड़ा करकट व फसलों के अवशेष को भी डाल देना चाहिए। ऐसा करते हुए जब गड्ढा जमीन से 1.5 से 2 फुट ऊचांई तक भर जाए तो इसी प्रकार गड्ढे के अगले 3 फुट हिस्से को भरना चाहिए। फिर गोबर व मिट्टी के लेप से बन्द कर देना चाहिए। इस विधि से हम 3-4 महीने में अच्छी गुणवत्ता की गोबर की खाद बना सकते है। इस प्रकार बनाई गई गोबर की खाद में 0.5 - 1.0 प्रतिशत नाइट्रोजन, 0.3 - 0.5 प्रतिशत फास्फोरस व 1.0 - 1.5 प्रतिशत पोटाशियम होता है। गोबर की खाद को 6 टन प्रति एकड़ के हिसाब से डालना चाहिए। गोबर की खाद खरीफ फसलों की बजाए रबी की फसलों में डाला जाए तो परिणाम ज्यादा अच्छे होते हैं। इस प्रकार उच्च गुणवत्ता की गोबर की खाद बनाकर रासायनिक खादों की मात्रा घटा सकते है तथा खेती में होने वाले खर्चे को कम कर सकते है।